SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कला – सुन्दरता की अभिव्यक्तिः एक समग्र अध्ययन

कविता पाल, पी.–एच.डी., शिक्षा विभाग
इन्द्रप्रस्थ इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी एण्ड मैनेजमेंट कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
कविता पाल, पी.–एच.डी.
E-mail : kavitapal2222@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/05/2025
Revised on : 28/07/2025
Accepted on : 06/08/2025
Overall Similarity : 00% on 29/07/2025

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र में कला की व्यापक संकल्पना और उसकी सुन्दरता की अभिव्यक्ति के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। कला, जो संस्कृत धातु 'कल्य' से निर्मित है, मानव जीवन की आत्मा और सभ्यता की पहचान है। यह अध्ययन कला के मूलभूत सिद्धांतों, विभिन्न स्वरूपों और मानव जीवन पर इसके प्रभावों की गहन समीक्षा प्रस्तुत करता है। शोध में कला को 'सत्य', 'शिव' और 'सुन्दर' की त्रिविध अभिव्यक्ति के रूप में विश्लेषित किया गया है। विभिन्न विद्वानों के मतों का संकलन करते हुए, यह पत्र कला की नौ मुख्य विशेषताओं – क्रियाशीलता, श्रेष्ठता, क्रिया, तकनीकी, अनुकूलता, ज्ञान, अभिव्यक्ति, कल्पना और खेल – का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। संगीत, नृत्य, चित्रकला जैसी विविध कलाओं के माध्यम से जीवन में सुन्दरता की अभिव्यक्ति के तरीकों का अध्ययन किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह है कि कला न केवल सौन्दर्य का संप्रेषण करती है, बल्कि आत्मिक संतुलन, मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य भी करती है।

मुख्य शब्द

कला, सुन्दरता, अभिव्यक्ति, संस्कृति, सत्य–शिव–सुन्दर, अनुभूति.

प्रस्तावना

कला मानव सभ्यता का अभिन्न अंग है और मानवीय अभिव्यक्ति का सबसे प्राचीन एवं शक्तिशाली माध्यम है। यह केवल बाह्य सौंदर्य का चित्रण मात्र नहीं है, बल्कि आंतरिक अनुभूतियों, भावनाओं और विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति का साधन है। संस्कृत भाषा में 'कला' शब्द की उत्पत्ति धातु 'कल' से हुई है, जिसका अर्थ हैं – करना, रचना करना अथवा गणना करना। इस व्युत्पत्ति से ही कला की मूलभूत प्रकृति का आभास मिलता है कि

यह एक सक्रिय, रचनात्मक और व्यवस्थित प्रक्रिया है।

प्राचीन भारतीय साहित्य और दर्शन में कला को 'सत्य', 'शिव' और 'सुन्दर' की त्रिविध अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यह त्रिविध सिद्धांत कला की व्यापकता और गहनता को दर्शाता है। सत्य कला की प्रामाणिकता को, शिव कल्याणकारी प्रभाव को, और सुन्दर सौन्दर्यात्मक अनुभूति को प्रकट करता है।

आधुनिक युग में कला की भूमिका और भी व्यापक हो गई है। यह न केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का साधन है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संरक्षण और मानवीय मूल्यों के संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। कला के माध्यम से व्यक्ति अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करता है और समाज के साथ एक गहरा संवाद स्थापित करता है।

न तत् ज्ञानं न तच्चिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न स योग्यः स नाझेयः योगेन यन्न साध्यते।।

"ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कोई शिल्प (कला) नहीं, ऐसी कोई विद्या नहीं, ऐसी कोई कला नहीं, ऐसा कोई योग्य पुरुष नहीं और ऐसा कोई जानने योग्य तत्व नहीं है– जिसे योग द्वारा सिद्ध (प्राप्त) न किया जा सके।"

कला का व्युत्पत्तिमूलक विश्लेषण

संस्कृत धातु 'कल' के विविध अर्थों का विश्लेषण कला की बहुआयामी प्रकृति को समझने में सहायक है–

- **प्रथम अर्थ समूहः** करना, रचना करना, गिनना – ये अर्थ कला की सृजनात्मक और व्यवस्थित प्रकृति को दर्शाते हैं। कलाकार कुछ नया रचता है, एक व्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से।
- **द्वितीय अर्थ समूहः** मदमस्त करना, प्रसन्न करना – ये अर्थ कला के भावनात्मक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। कला दर्शक या श्रोता में आनंद और उल्लास की भावना जगाती है।
- **तातीय अर्थः** आनंद – 'क' अक्षर के आनंद अर्थ से कला का संबंध इसकी परम उद्देश्य को दर्शाता है, जो है आनंद की प्राप्ति।

विभिन्न विद्वानों ने कला की परिभाषा अपने–अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है:

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "एक अनुभूति को दूसरे तक पहुँचाना ही कला है।" यह अत्यंत सरल परंतु गहन परिभाषा है जो कला के मूल तत्व को स्पष्ट करती है।

टॉल्स्टॉय के अनुसार "किसी अनुभूति के फलस्वरूप जब किसी के मन में कोई भावना उठे और वह उसकी अभिव्यक्ति करे कि दूसरे भी उस भावना की ओर आकर्षित हो सके, वह कला का कार्य है।"

हीगेल के अनुसार "कला भाव प्रभाव की अभिव्यक्ति है। यदि अपने भावों को क्रिया, रूप, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्त किया जाए कि उसे देखने या सुनने वाले में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए तो उसको कला कहा जाएगा।"

कला के मूलभूत सिद्धांत

सत्य–शिव–सुन्दर की अवधारणा

भारतीय दर्शन में कला को सत्य, शिव और सुन्दर की त्रिविध अभिव्यक्ति माना गया है। यह त्रिविध सिद्धांत कला की संपूर्णता को दर्शाता है:

- **सत्यः** कला में प्रामाणिकता और वास्तविकता का होना आवश्यक है। यह सत्य केवल तथ्यात्मक नहीं, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर भी होना चाहिए।
- **शिवः** कला का कल्याणकारी प्रभाव होना चाहिए। यह व्यक्ति और समाज के लिए हितकारी हो, मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दे।
- **सुन्दरः** कला में सौन्दर्य का होना स्वाभाविक है। यह सौन्दर्य केवल बाह्य नहीं, बल्कि आंतरिक भी होना चाहिए।

साहित्य–संगीत–कला–विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छ–विषाण–हीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।

"जो व्यक्ति साहित्य, संगीत और कला से रहित है, वह वास्तव में एक पशु के समान है—बस उसके पास पूँछ और सींग नहीं हैं। वह केवल घास नहीं खाता, बाकी सब कुछ तो पशु की तरह ही करता है। वास्तव में ऐसा जीवन केवल पशुओं के लिए ही उपयुक्त होता है।"

कला की आवश्यक विशेषताएं

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, सच्ची कला में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

- सत्य हो।
- सौन्दर्य हो।
- कल्याणकारी हो।
- सत्य और सौन्दर्य के निराकरण को भी सकारात्मक रूप देने वाली हो।
- स्वच्छन्द अभिव्यक्ति का साधन हो।
- भावों के अनुरूप अनुभूति कराने वाली हो।

कला की क्रियाशीलता

कला एक सक्रिय मानवीय क्रिया है जो मानव मन और शरीर दोनों को प्रभावित करती है। यह प्राकृतिक घटनाओं के समान एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जैसे फूलों का विकास, चन्द्रमा का घटना–बढ़ना, सूर्य का निकलना, बादलों का बरसना, विद्युत का चमकना और इन्द्रधनुष का बनना प्राकृतिक नियमों के अधीन होता है, उसी प्रकार कलात्मक क्रियाओं का निर्माण भी मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

यह क्रियाशीलता कला को जीवंत बनाती है और इसे निष्क्रिय अनुकरण से अलग करती है। कलाकार केवल नकल नहीं करता, बल्कि अपनी सक्रिय भागीदारी से नवीन सृजन करता है।

कला की श्रेष्ठता

कला कभी भी औसत दर्जे की नहीं हो सकती। यह एक विशेष कौशल और शक्ति की देन होती है। कलाकार का कार्यकाल वह समय होता है जब वह अपने विशिष्ट कौशल और बौद्धिक तथा भावनात्मक तैयारी के साथ श्रेष्ठ कला की रचना करता है।

श्रेष्ठता की यह अपेक्षा कला को सामान्य कर्म या शिल्प से अलग करती है। हर कलाकृति में नवीनता और आकर्षण होना आवश्यक है, जो गहन मानसिक क्रिया और मनन से ही संभव है।

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्तिहरे नमस्तुभ्यं सम्पत्तिकरुणे कृपानिधे।।
नमोऽस्तु ते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।

यह श्लोक देवी लक्ष्मी की स्तुति करता है, जो भगवान विष्णु की प्रिय हैं, जगत का कल्याण करने वाली हैं और दुखों को हरकर धन, समृद्धि एवं करुणा प्रदान करती हैं। वे शंख, चक्र और गदा धारण किए हुए महालक्ष्मी रूप में विराजमान हैं और देवताओं द्वारा पूजित हैं उन्हें बारंबार नमस्कार है।

कला एक क्रिया

कला में किसी सामग्री को काट–छांटकर नया रूप देना शामिल है। चाहे वह मूर्तिकला हो, वास्तुशिल्प हो, चित्रकला हो या कोई अन्य शिल्प – सभी में सामग्री के साथ क्रिया करके उसे नया आकार दिया जाता है।

यह क्रिया केवल भौतिक नहीं है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी होती है। कलाकार अपनी अनुभूतियों और विचारों को भी तराशता और आकार देता है।

कला की तकनीकी

कला एक तकनीकी क्रिया है जिसमें सामग्री के प्रयोगात्मक ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिना उचित तकनीक के श्रेष्ठ कलाकृति का निर्माण संभव नहीं है। तकनीकी ज्ञान में शामिल है–सामग्री की प्रकृति की समझ, उपकरणों का सही प्रयोग, विभिन्न तकनीकों की जानकारी, अभ्यास और अनुभव।

कला एक ज्ञान

ज्ञान कला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ज्ञान के अभाव में तकनीकी कार्य अपूर्ण रह जाता है। जब मन और मस्तिष्क क्रियाशील होकर तकनीक, वस्तु, तत्व और क्रिया का पूर्ण विवेचन करते हैं, तभी सत्य की प्राप्ति होती है।

कलाकार में निम्नलिखित प्रकार के ज्ञान का होना आवश्यक है–विषयवस्तु का ज्ञान, तकनीकी ज्ञान, सैद्धांतिक ज्ञान, अनुभवजन्य ज्ञान।

कला की अभिव्यक्ति

लियोनार्डो द विंची के अनुसार, "कलाकार जिन आकृतियों की रचना करता है वह उसके आंतरिक भावों पर आधारित होता है।" कला मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

यह अभिव्यक्ति एक प्रकार की भावनात्मक भाषा है जो शब्दों से कहीं अधिक प्रभावशाली हो सकती है। कलाकार अपने विचारों और अनुभूतियों को कलाकृति के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाता है।

कला की कल्पनाशीलता

बुद्धघोष के अनुसार, "संसार भर की जितनी कलाकृतियां हैं सब कल्पना की उपज हैं।" कल्पना कला का आधारभूत तत्व है। कलाकार वास्तविक संसार से सामग्री लेकर अपनी कल्पना के द्वारा उन्हें पुनः संयोजित करके नवीनता उत्पन्न करता है।

कला के भविष्य की संभावनाएँ

- भविष्य में कला पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों के संयोजन से और भी समृद्ध होगी।
- **शिक्षा में एकीकरण:** कला शिक्षा का मुख्यधारा में एकीकरण व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है।
- **सामाजिक परिवर्तन का माध्यम:** कला भविष्य में भी सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता का प्रभावी माध्यम बनी रहेगी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कला मानव जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। कला केवल सुन्दरता की अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह मानवीय अनुभूतियों, भावनाओं और विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है जो व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण में योगदान देती है।

कला की नौ मुख्य विशेषताएँ – क्रियाशीलता, श्रेष्ठता, क्रिया, तकनीकी, अनुकूलता, ज्ञान, अभिव्यक्ति, कल्पना और खेल – का विश्लेषण दर्शाता है कि कला एक बहुआयामी घटना है जो मानव जीवन के विविध पहलुओं को प्रभावित करती है। संगीत, नृत्य, चित्रकला और साहित्य जैसी विभिन्न कला विधाओं के माध्यम से जीवन में सुन्दरता

की अभिव्यक्ति होती है और मानवीय संवेदनाओं को नया आयाम मिलता है।

कला और संस्कृति का गहरा संबंध इस तथ्य को उजागर करता है कि कला किसी भी समाज की सभ्यता और संस्कृति की परिचायक है। उच्च सांस्कृतिक स्तर वाले समाज में उच्च कोटि की कला का विकास होता है। कला न केवल व्यक्तित्व विकास में सहायक है, बल्कि समाज सुधार का भी महत्वपूर्ण उपकरण है।

शिक्षा के क्षेत्र में कला की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों तक, कलाशिक्षा ने मानव संसाधन विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

आधुनिक युग में तकनीकी परिवर्तन, व्यावसायीकरण और सांस्कृतिक संकट जैसी चुनौतियों के बावजूद, कला की मूलभूत शक्ति और महत्व निरंतर बना रहेगा। भविष्य में कला पारंपरिकता और आधुनिकता के संयोजन से और भी समृद्ध होगी।

अंततः, कला 'सत्य', 'शिव' और 'सुन्दर' की त्रिविध अभिव्यक्ति के रूप में मानव जीवन को आध्यात्मिक उच्चता प्रदान करती है। यह न केवल व्यक्तिगत आनंद का स्रोत है, बल्कि सामाजिक कल्याण और मानवीय मूल्यों के संरक्षण का भी साधन है इसलिए कला का संरक्षण, संवर्धन और विकास प्रत्येक सभ्य समाज का दायित्व है।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र (1929) *हिंदी साहित्य का इतिहास,* साहित्य भवन, गोरखपुर।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (1962) *कला का तत्वमीमांसा,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. द्विवेदी, कपिलदेव (1995) *भारतीय कला का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. अग्रवाल, वासुदेवशरण (1965) *भारतीय कला,* प्रभाकर माचवे, वाराणसी।
5. वाजपेयी, आचार्य नंददुलारे (1956) *संस्कृति के चार अध्याय,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. राममूर्ति (1987) *भारतीय चित्रकला का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. ललित कला (2020–2023) ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, वार्षिक अंक 2020–2023।

****